नीलू मांग

- अन्ना भाऊ साठे
अनुवादक- डॉ. हसन यु. पठान

तोप तैयार की गयी। उसमें गोला भरा गया। बत्ती वाला बत्ती लेकर आगे आया। वहीं साजूर वाला नीलू मांग हाथ में काली टोपी लेकर तोप की ओर चलने लगा। उसका हर एक कदम मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा था। वह निडर था। अब वह मरने वाला है यह खयाल भी उसके मन में नहीं था। उसे किसी भी तरह का डर भी नहीं था। वह सीधे तोप के आगे जाकर खड़ा हो गया।

सभी अफ़सर परेशान थे। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। गंभीर चेहरे बनाये। उन्हें लगा कि, कुछ तो कहना चाहिए। चिंता होने लगी कि यह नीलू मांग अब तोप के मुँह में चला जायेगा। अंततः एक वरिष्ठ अधिकारी ने दुःखी स्वर में कहा, 'प्रभु तुम्हारी आत्मा को शांति दे। तुम्हे माफ़ करें। अब तुम प्रभु के पास जाओगे। अगर तुम्हें कुछ बात करनी है तो कहो। अब तुम मर जाओगे। दुनिया से जाओगे। तुम्हारी बात फिर नहीं सुनी जायेगी। बोलो, कुछ आखरी इच्छा होगी तो बताओ।'

यह सुनकर नीलू को हैरानी हुई। वह मन ही मन बुदबुदाया, ये लोग जो मुझे तोप के मुँह में देकर आज़ाद होने वाले हैं, इस आखिरी क्षण में मेरी इतनी तारीफ़ क्यों कर रहे हैं? मैं उनका इतना प्यारा कब हुआ ? और स्पष्ट रूप से कहा, 'मतलब साहेब, मैं अब मरने वाला हूँ और मैं मरते-मरते बातें करू ऐसा आप सोचते हैं; लेकिन किससे बाते करू ? मेरी घोड़ी वहां खड़ी है। मेरे लोग उस ओर खड़े हैं और ऐसे में मेरा बोलना थोड़ा मुश्किल होयेगा। मेरेकू इसके बारे में सोचने दो।'

ओर नीलू सोचने लगा।

मैं खुरपी की मूठ से सीधे तोप के मुहाने पर कैसे पहूँचा इसके बारे में वह सोचने लगा। मुझे किसने और क्यों लाया? इस प्रश्न का उत्तर नीलू खोजने लगा।

साजुर गांव में नीलू मांग एक सज्जन, गरीब आदमी के रूप में जाना जाता था। हर एक आदमी नीलू का सम्मान करता था। नीलू ने किसी का थूक तक लांघा नहीं, किसी की कचरे पर भी पैर नहीं रखा। अच्छी खासी उंचाई, शरीर में खूब ताकत, रंग रूप से सावला लेकिन गांव में सबसे अच्छा। वह अभी बाईसवें साल में प्रवेश कर चूका था। लेकिन वह शांत था। गाँव की सभी महिलाओं को माँ, चाची, दादी, भाभी, बहन ऐसी स्नेह भरी बातें करते हुए वह गाँव का लाड़ला हो गया था। उसकी केवल माँ थी। उनकी माँ ने उनका पालन-पोषण किया था। छोटे से लेकर बूढ़े तक सभी नीलू को अच्छा आदमी कहते थे। एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में वह गाँव में मशहूर था।

साजूर गाँव कोयना के तट पर स्थित है। नदी किनारे मक्के, गन्ने की फसलें लहलहा रही थी। इस क्षेत्र में रहकर मेहनत करने वाले गरीब लोग भी अमीर हो सकते थे।

साजूर में पाटिल परिवार में जन्मे दो भाई चिमाजी और भीमाजी आपस में लड़ा करते थे। अंत में उन्होंने गांव के पंचों को इकट्ठा कर अपनी जमीन का बँटवारा करा लिया, लेकिन उनकी दुश्मनी बनी रही। छोटा भीमा डरपोक था। उसे लगा कि भले ही मैं अपना हिस्सा बाँट कर लू, फिर भी यह बड़ा भाई चिमाजी कुछ भी मेरे हाथ नहीं लगने देंगा। इसलिए वह एक अच्छा रखवाला खोज रहा था।

भीमा की खड़ी फसल नष्ट हो रही थी। खेत में लहलहाती मक्का की फसल लूटी जा रही थी। हल्दी की चोरी की जा रही थी और किसी को उसकी परवाह नहीं थी। इसीलिए भीमा परेशान हो गया था। उसे लूटा जा रहा था। वह चाहता था कि अच्छे से कोई उसके फसलों की रखवाली करें।

सबेरा हो चुका था। साजुर गाँव जाग गया था और अपने दैनिक कार्य में लग गया था। लोग घड़े लेकर नदी की ओर भाग रहे थे। नदी का तट लोगों से भरा हुआ था। कावड़िये शोर मचा रहे थे। नीलू घड़ा भर घर की ओर चल दिया था। रास्ते में उसकी मुलाकात भीमा से हुई। नीलू का महाकाय शरीर देख कर वह रुक गया और सोचने लगा और बोला,-

'नीलू, क्या तुम मेरे मकई की रखवाली करोगे?'

'क्या दोगे?' नीलू ने कंधे पर घड़ा रखकर कहा, 'मुझे क्या, किसी का भी काम ही करना है?

'मैं तुम्हें एक मनभर मकई और एक मनभर चावल दूँगा। कहो, मंज़ूर है क्या?'

'मंज़ूर!' नीलू को खुशी हुई। बेकार घुमते फिरने से अच्छा है कुछ काम किया जाय इसीलिए उसने भीमा पाटील के मकई की रखवाली करने का जिम्मा ले लिया। बातें हुई और सब तय हो गया। एक मनभर मकई और एक मनभर चावल मिलने वाले है, इस बात की नीलू को खुशी हुई।

नीलू को हाल ही में नए कानून के तहत अपराधी के रूप में तीन वक्त पेशी देनी पड़ रही थी; लेकिन गाँव द्वारा एक 'अच्छे आदमी' के रूप में अनुशंसित किये जाने के कारण, उसे एक बार उपस्थित होना पड़ा रहा था।

नीलू गरीब था। रात होते ही वह घर से बाहर नहीं निकलता था और कभी निकला तो पड़ोस के माहारवाड़ा में बाबा माहार से मिलने चला जाता था। उसके घर बैठता था। बाबा का नीलू को बड़ा आधार था। वह बाबा के शब्दों का बड़ा सम्मान करता था। गाँव के सभी लोग बाबा को समझदार व्यक्ति मानते थे।

मकई की खेती लहलहा रही थी। अब हुरड़ा तैयार हो गया था। गांव में मक्के के खेत दिख रहे थे। बच्चे भूट्टे खा रहे थे। लोग मकई की रोटी माथे को लगाकर खा रहे थे।

नीलू ने नदी किनारे भीमा पाटिल के मकई के खेत में झोपड़ी बना दी थी। झोपड़ी के आगे अलाव जला दिया और रखवाले के रूप में मकई के खेती की रखवाली करने लगा था।

नीलू ने भीमा पाटिल के मकई के खेत की रखवाली करने की जिम्मेदारी ले लेने के बाद से गाँव के लोग कह रहे थे की 'नीलू ने यह ठीक नहीं किया। दो हाथियों की लड़ाई में गरीब को नही पड़ना चाहिए। इसका परिणाम खराब होगा।'

नीलू एक वक्त की हाजरी देकर मकई की रखवाली कर रहा था। हाथ में कुल्हाड़ी लेकर वह सारी रात उस मक्के के खेत की चारों ओर से रखवाली करता रहा। उसने उस खेत में झोपड़ी के आगे अलाव सुलगायी थी। एकाद भूट्टा भून कर उसे खाते खाते वह रखवाली कर रहा था। उसके झोपड़ी से कुछ ही अंतर पर चिमा पाटिल की बस्ती थी। वह और उसका दोस्त रामू सुतार वे दोनों रातभर बैठकर चिमा के मक्के की रखवाली करते थे। भीमा के मकई की नीलू मांग ने रखवाली करने की वज़ह से चिमाजी को गुस्सा आया था। वह भीमा से बदला लेने की राह देख रहा था और रामू सुतार से 'क्या करना चाहिए?' इसका सुझाव पूछ रहा था।

और नीलू भीमा पाटिल के खेत में तैयार था। सावधान था। कोई भी नीलू पर हमला नहीं कर सकता था। यह नहीं बताया जा सकता था कि तब उसकी कुल्हाड़ी क्या करेगी। नीलू का देह देखकर चिमाजी बहुत ड़रता था, लेकिन वह किसी भी तरह नीलू से बदला लेना चाहता था।

सूर्यास्त हो रहा था। नीलू को हाजिरी देने जाना अनिवार्य था। वह गाँव की ओर जा रहा था। नीलू को गाँव की ओर जाते देख चीमाजी ने आवाज़ लगाई। उसने कहा,

"ए नीलू मांग, इधर आ जा यार। जैसे की स्वयं खेत का मालिक हो ऐसी रखवाली करते बैठे हो। कहा जा रहे हो? आओ, पान खा कर जाओ।'

'नहीं। हाजिरी देकर आता हूँ।' नीलू ने विनम्र होकर कहा, 'क्या आप मकई पर नजर रख सकती हैं। अभी हाजरी देकर आता हूँ।'

'जाओ, लेकिन जल्दी आओ,' चिमा ने कहा और नीलू गाँव की ओर चला गया।

नीलू के चले जाने पर रामू सुतार मुस्कुराया। चीमा पाटिल को खुशी हुई. रामू ने कहा, 'पाटिल, नीलू की रखवाली करें क्या?'

और जैसे ही चीमा ने उसे सिर हिलाया, उसने एक बोरी भरकर मकई तोड़ दी। कुछ भूनकर खा लिए और बाकी घर ले गये।

सुबह नीलू को यह देख कर दुख हुआ कि मक्के के दाने चोरी हो गये हैं, वह भीमा के पास गया और कहा, 'मैं रात में हाजिरी देने गया और चोरों ने मुझे धोखा दिया। बोरी भरकर मकई की चोरी हुई।'

'ठीक हुआ, लेकिन अब सावधान हो जाओ' भीमा ने नीलू को सूचित किया।

फिर नीलू बाबा महार के पास चला गया। सारी बातें बताते हुए कहा, 'मैंने मक्का की राखवाली लेकर गलती की। अब क्या करें? मैं रोज हाजिरी देने जाऊंगा और घर के चोर ही मकई उड़ा ले जायेंगे।'

बाबा महार ने नीलू को हिम्मत दी। उन्होंने कहा, 'आज से मैं आ जाऊंगा रखवाली के लिए। जब तू हाजिरी देने जायेगा उस वक्त के लिए। फिर तुम सारी रात जागते रहना।'

यह सुनकर नीलू को खुशी हुई।

अगले दिन जब नीलू हाजिरी देने के लिए गाँव की ओर निकला, तो चिमाजी पाटिल ने उसे फिर से बुलाया और जैसे ही नीलू राम सुतार के पास आया, उसने कहा,

'क्या नीलू मांग, रात में नांगीसरा पर मकीसरा ने आलाव जलाया था तब तुम कहाँ थे?'

नीलू मुस्कुराया और गाँव की ओर चल दिया। बाबा महार उसकी झोपड़ी के पास रखवाली करते बैठा था। उसे देखकर सुतार चुप हो गया।

नीलू ने हाजिरी दी। आते आते उसने चिमा पाटिल का सीधे मेढ़ा ले लिया। सुतार की नई जोड़ी हुई गाडी ली और महारवाड़ा चला गया। मेढ़ा और गाड़ी बाबा के घर के सामने रखकर वह खेत में आ गया और बोला,

'बाबा, तेरे घर में सुतार की नई गाड़ी और पाटिल का मेढ़ा खड़ा कर के आया हूँ। तू जल्दी जा। मेढ़े को मारकर और गाड़ी को जला दे। रेड़े को पकाकर रात को मेरे लिए लेकर आ। भाग जल्दी।'

बाबा चला गया। उसने मेढ़े को मार डाला। गाड़ी जला दी। मेढ़ा पक गया और उसका मांस लेकर वह रात को खेत में आ गया। तब नीलू ने पेट भर कर मांस खाया। डकार ली और फिर बाबा घर चले गए।

सुबह हुई। रामू सुतार दहाड़ता हुआ आया और चिमाजी पाटिल से बोला,

'पाटिल, मैं रात को खेत में चला गया था। तब दूसरों के लिए बनाई तीन सौ की गाड़ी गई और आपकी मेंढ़ा भी लूट लिया गया।'

यह सुनकर चिमाजी घुटनों के बल बैठ गया। उसे नीलू पर शक हुआ।

दो दिन बीत गए।

रात हो गयी थी। गाँव में हर बस्ती पर आग सुलग रहा थी। नीलू ने बाबा महरा को अपने बस्ती पर बैठा लिया था और वह गांव चला गया। अब नीलू भागकर हाजिरी के लिए गया होगा, मुझे जाकर पिछला बदला लेना चाहिए। इस सोच में रामू सुतार नीलू की बस्ती की ओर चला गया, लेकिन बाबा शरीर पर कम्बल ओढ़े पीठ दिखाकर बैठा था। यह नीलू है, समझकर सुतार वहा से भाग गया। जैसे ही नीलू हाजिरी देकर आया तो बाबा अपने घर चला गया। चार दिन बीत गए।

एक दिन सुबह रामू सुतार नीलू के पास आया। वह उसके अलाव के पास बैठ गया और बोला,

'क्या नीलू, सक्त रखवाली कर रहे हो?'

'लोगों की नौकरी है यह।' नीलू ने कहा, 'ए सुतार, लेकिन किसीने उस दिन जब मेढ़ा और गाड़ी को लूट लिया था। तब तुम कहाँ थे?'

यह सुनकर सुतार हैरान रह गया। उसे यकीन हुआ कि उसकी नई गाड़ी और पाटिल का मेढ़ा मांगों ने ही चुरा लिया है। उसने कुछ कहा नहीं। चुपचाप उठकर चीमा पाटिल के पास चला गया। उसने पाटिल को नीलू की कही बात बताई।

मांगों ने धोखा दिया। उसका मेढ़ा मार डाला। सुतार की गाड़ी जला डाली। अब नीलू का बंदोबस्त करना होगा, यह सोच कर उसने नीलू के नाम से शिकायत दर्ज करा दी। गांव से पांच गवाह पेश किये गये। नीलू को गिरफ्तार कर लिया गया। मामला खड़ा हो गया। पाटिल ने वकीलों की सेना खड़ी की। आख़िर में क़ानून के घेरे में फसाकर नीलू को तीन महीने की सज़ा सुनाई गई। बेवज़ह नीलू तीन महीने पत्थर तोड़ने के लिए जेल चला गया। बेगुन्हेगार बेचारा।

नीलू ने तीन महीने जेल में बिताए और घर आ गया। तभी से वह तड़प रहा था। जिन लोगों ने उसके खिलाफ गवाही दी थी, उनके लिए वह काल बनकर आया था। गांव वाले नीलू में आये इस भयानक बदलाव को देखकर हैरान रह गए। गवाह भयभीत थे। वे पेट में सुई की तरह चुभने लगें।

नीलू कुछ नहीं बोला। वह खा रहा था। गाँव के लोगों ने उससे पूछा, 'नीलू कैसे हो?', लेकिन नीलू ने किसी से बात नहीं की।

आठ दिन बीते और एक रात अचानक पाँच गवाहों के घरों में आग लग गई। आग इतनी भयंकर थी कि उसने दूसरी पंद्रह घरों को भी अपनी लपेट में ले लिया। एक ही रात में बीस घर जलकर राख हो गये।

चार दिन और बीते और फिर चार घरों में आग लग गई। उसकी चपेट में आस-पास के दस घर चलकर राख हो गये। गाँव में भय का माहौल था। हर जगह राख दिखाई दे रही थी।

यह नीलू मांग का ही किया कराया है ऐसा गाँव में चर्चा होने लगी। चिमा पाटिल को इस बात का ड़र बैठा गया। उसके मुँह से पानी उतर गया। और एक दिन उसके भी घर में आग लग गयी। गाँव में अफरा-तफरी मच गई। लोग कहने लगे कि 'अब गांव में कोई घर नहीं बचा रहेगा।' सुतार का घर तो पहले ही जल गया था। नीलू ने रामू सुतार को संदेसा भेजा था कि, 'दूसरा घर मत बनाओ, तुम जितने भी घर बनाओगे वो इसी तरह जल जाएंगे।' और यह संदेसा सुनकर सुतार झोपड़ी बनाकर रहने लगा था।

नीलू मांग आधा गाँव जलाकर फरार हो गया था। वह जंगल में घूम रहा था। वह कुल्हाड़ी लेकर पहाड़ों में रहने लगा था। उसने उस क्षेत्र के सभी भगोड़ें उसके साथ जाकर मिल गये थे। वे सभी पहाड़ों में एक साथ ही रहते थे। हर चोर, चोरी करके अपना घर भर रहा था और नाम नीलू का हो रहा था। उस क्षेत्र में होने वाले सभी अपराध नीलू के नाम से ही सरकारी फाइलों में दर्ज हो रहे थे। सरकार नीलू पर दाँत खट्टे कर रही थी। गिरफ्तारी वारण्ट निकला था। बंदूकें उसकी तलाश कर रही थी।

और नीलू मौत को चकमा दे रहा था। वह अपनी जान बचाने के लिए भाग रहा था तो कभी खड़े होकर सामना कर रहा था। उसकी डर से साजूर गाँव भयभीत था। नीलू का गुस्सा बढ़ गया था। उनका नाम सुनते ही मैं मैं करने वाले भी भय से थरथराने लग जाते थे। सरकार से कोई शिकायत नहीं कर रहा था। सभी को भय था कि जो भी सरकार को खबर देगा, उसका सर्वनाश कर दिया जायेगा।

नीलू को दूर-दूर के अपराधी भी बड़ा आदमी मान रहे थे। उसकी मदद ले रहे थे। वह चोरी कर एक हिस्सा नीलू तक पहुंचा देते थे। नीलू के सहारे उन्हें ऐसा लग रहा था मानो वे आसमान छू रहे हों।

नीलू निडर हो गया था। वह जो चाहे करने को तैयार था। वह किसी से नहीं डरता था। अब वह दुनिया पर चढ़ाई करने लगा था।

प्रभात का समय था। कृष्णा नदी का तट शांत लग रही था। नीलू एक पहाड़ पर बैठा था। तभी एक आदमी आया। उसने कहा, 'मैं वारणातट से हूं। वारणातट के भेडस गांव में सरकारी खजाना है। उसको लूट कर जीवन को सार्थक बनाते हैं।'

नीलू तैयार हुआ। वह अपने लोगों को लेकर भेड़स गांव के लिए रवाना हो गया। वह यह सुनकर खुश हुआ कि वाटेगांव का फकीरा मांग उस खजाने को लूटने वाला है। वह जल्द बाजी में निकला और फकीरा से मुलाकात की।

और एक रात सरकारी खजाना लूट लिया गया। एक लाख रुपये लूटे गये इसलिए सरकार नाराज हो गयी। कई सैनिक भागने लगे। पीछा करना शुरू हुआ और एक मांग ने सभी के नाम बता दिये। इसमें नीलू का नाम भी लिया गया था। नीलू ने सरकारी खजाना लूटा है, इसलिए उसके नाम का गिरफ्तारी वारंट निकाला गया।

राम सुतार ने बिस्तर पकड़ लिया था। हर रोज सुबह वह कोने में बैठ जाता अपने उस बुरे व्यवहार के लिए अपने मुँह पर मारता रहता था।

कई ग्रामीण अपने घर में आग लगने का इंतजार कर रहे थे। कई लोगों को सपने आए कि उनके घर में आग लग गई है। ये सभी राम सुतार और चीमा पाटिल को कोस रहे थे।

नीलू निडर था। जब से भेड़सगाँव का खजाना लूटा गया, तब से वह अपने जीवन के प्रति उदार हो गया था। वह प्रतिदिन मशाल लेकर गांव में प्रवेश करता था। दहशत भरी रातों में मशाल की रोशनी में उस भयानक चेहरे को देखकर लोग सहम जाते थे। दरवाज़े की दरार से नीलू को देखते रहते थे और 'भगवान यह पीड़ा दूर कर दे!' कहते हुए भगवान पर बोझ डाल देते थे। नीलू ने गाँव को आतंकित कर दिया था। वह मन में कह रहा था, 'मैंने अपना जीवन गरीब आदमी की तरह काटा। नमस्कार किया। दूर बैठकर तम्बाकू माँगकर ली। उसे दूर बैठकर ही खा लिया। लेकिन गांव ने इसका गलत अर्थ निकाला। उन्होंने सोचा कि मैं कमज़ोर हूँ और मुझे जेल का रास्ता दिखा दिया। अब मैं उन्हें श्मशान दिखाऊंगा।'

दिन ढल रहे थे और नीलू पहाड़ों में भटक रहा था। उसका खौफ़ बढ़ता जा रहा था। सरकार भी शांत नहीं थी। बड़े-बड़े अधिकारी नीलू को कैद में करने के लिए भाग दौड़ कर रहे थे। हर पुलिसकर्मी अपनी जिंदगी को सुरक्षित रखते हुए संघर्ष कर रहा था। वे जानते थे कि नीलू किस प्रकार से आक्रमण करता है। पागल आदमी - नीलू, जान ले लेगा ऐसा उन सभी को लगता था।

सरकार भी जिद्द पर अड़ गयी थी। अपनी सारी सेना मैदान में उतार दी गई और नीलू का पीछा शुरू हो गया। पहाड़ को घेर लिया गया। खेत में हर मेड़ पर पुलिस को तैनात किया। प्रत्येक जाले को कस लिया गया। हर पेड़ के नीचे एक सिपाही दिखाई देने लगा। नीलू को चारों ओर से घेर लिया गया था। सरकार के सामने उसकी ताकत कम पड़ गयी। उसने हथियार डाल दिया और सरकार के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

तब साजूर गांव के कई लोगों ने राहत की सांस ली। उनके सिर पर लटकी हुई तलवार हट गई। नीलू के आत्मसमर्पण की ख़बर सुनकर नीलू की बूढ़ी माँ रोने लगी। वह इस बात से दुखी थी कि उसके निरपराध नीलू को फाँसी होगी।

फिर नीलू का मामला खड़ा हो गया। सरकार ने कानून और वकीलों की फौज अदालत में खड़ी कर दी। नीलू उन सबके सामने अकेला खड़ा था। उसके पास कोई वकील नहीं था। उसकी तरफ से खड़ा होने का मतलब खुद गुनाहगार होना है ऐसा वकीलों को लग रहा था। किसी में यह कहने की शक्ति नहीं थी कि यह आदमी अच्छा है। वह अकेला था, लेकिन निडर था। 'मैंने कोई अपराध नहीं किया है। मैं ईमानदार हूँ लेकिन राम्या सुतार और चिम्या पाटिल ही थे जिन्होंने मुझे इस भयानक रास्ते को अपनाने के लिए उकसाया। 'वे ही असली अपराधी हैं।' ऐसा उसका मानना था।

नीलू मांग को एक भयानक अपराधी माना जाता था जिसने सरकारी खजाना लूटकर देशद्रोह किया था। उसे माफ़ी नहीं थी। जज इस बात पर विचार कर रहे थे कि उसे कितनी कड़ी सज़ा दी जाए। काला पानी से लेकर फाँसी तक की सभी सज़ाएँ उन्हें कम लगीं। कड़ी सजा सुना दी गई। ये सुनकर नीलू मुस्कुराया और बोला,

'सरकार, मायबाप, मैं नीलू मांग। मैं साजूर में तम्बाकू मांगकर खाने वाला। एक तोप के गोले की कीमत इतना महत्व मुझे देने के लिए मैं अपना सर आपके चरणों में रखता हूं।' ऐसा बोलकर नीलू तुरंत नीचे बैठ गया। उसने ज़मीन पर सर रखकर जज को सलाम किया और वैसे ही उठकर खामोशी से चलने लगा। मौत की ओर वह अग्रसर हो रहा था। चलते-चलते उसने अपने साथ चल रहे सिपाही से कहा,

'यह, नौकरी करके सिर्फ खाने के लिए मर जाओ मत, मरते हुए एक तोप के गोले की कीमत लेकर मर जाओ। अरे, तोप के सामने खड़ा होना मतलब मामूली काम नहीं है।'

नीलू तोप के सामने खड़ा होकर सोच रहा था कि क्या बोले। अपने पिछले जीवन के कई अवसरों को याद करते हुए वह अचानक होश में आया, मुस्कुराया और बोला,

'साहब, मैं क्या बोल सकता हूँ? अब मैं मर जाऊंगा। मेरे पास बात करने के लिए कुछ नहीं है। आप मुझे जल्दी से फाँसी पर लटका दो। समाप्त कर दो यह हमेशा की मुसीबत।

'क्या तुम्हें कुछ कहना है?' एक अफ़सर ने गंभीरता से पूछा।

नीलू ने धीरे से कहा, 'सरकारी खजाना लुटेरों ने लूट लिया और निर्दोष नीलू को तोप के मुँह में खड़ा कर दिया। जला दो बत्ती!'

अफ़सरों को आश्चर्य हुआ। अफ़सर उसका धैर्य और मौत का सामना करने का साहस देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने आपस में फिर चर्चा की। 'तोप के मुँह पर नीलू को डालकर हम कुछ भी बड़ा हासिल नहीं कर सकते। इसके विपरीत, अगर हम नीलू को छोड़ेंगे तो लोग आश्चर्यचकित होंगे।' ऐसा सोच कर वरिष्ठ अधिकारी ने आदेश दिया कि 'नीलू को छोड़ दो।' नीलू आज़ाद हुआ, खुशी से नाचता हुआ अपनी माँ से मिलने के लिए दौड़ने लगा और गाँव वाले यह देखकर हैरान रह गए कि तोप की मुँह में होने के बावज़ूद भी नीलू वापस आ गया।

साजुर में आते ही नीलू ने सबसे पहले कोयना नदी में छलांग लगाई, खूब तैरा और बोला, 'मां, यह नीलू जिंदा रहा।' अगर मैं मर जाता तो तुम्हारे पानी का स्पर्श छूट जाता। अब मैं एक सीधे आदमी की तरह व्यवहार करूंगा, एक आदमी की तरह रहूंगा!'

अनुवादकः- डॉ. हसन युनुस पठान
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, भाषा एवं साहित्य संकाय, सेन्ट जोसेफ विश्वविद्यालय,
बेंगलुरु - 560027, फोन नं. 8050694080, ई-मेलः pathanhasan@sju.edu.in